पै पाय मनाई सोए जीओ

सत्संग शुरू होने से पहले पाठी ने यह नज़म पढ़ी जो हाफिज़ साहब की पारसी गज़ल का उर्दू तरजमा (रूपान्तरण) है। महाराज जी साथ साथ व्याख्या करते जाते थे।

(1) गुम हुआ जो इश्क़ में फिर उसको नंगो नाम क्या,
दैरो काबा से गर्ज़ क्या, कुफ्र क्या इस्लाम क्या।

(2) शेख जी जाते हैं मैखाने से मुंह को फेर फेर,
देखिये मस्जिद में जाकर पायेंगे इनाम क्या।

जहां नशा मिलता है वह जगह अच्छी है। बुतखाना (मंदिर) अच्छा है या काबा अच्छा है? इन दोनों में प्रभु के जो भक्त हैं, कहते हैं कि अपनी अपनी जगह दोनों अच्छे हैं मगर अच्छी जगह वह है जहां प्रभु प्रेम का जलवा है।

हर जा कि हस्त जलवा-ए-जानाना बेहतर अस्त।

जिस जगह उस प्रीतम का जलवा है वह जगह सबसे बेहतर है। काबा और बुतखाना दोनों पत्थर के बने हुए हैं, दोनों उस प्रभु की याद में बनाए गए हैं, उनमें उस प्रभु का जलवा नहीं है। उसका जलवा तो इंसान के अंदर है जहां वह प्रकट है। वह चलता फिरता खुदा है। शरीयत के बंधनों में जो बंधे हुए हैं वे कहते हैं उधर न जाओ। भई देखो उधर क्या मिलता है? काबा भी उस प्रभु की याद में बनाया गया है, बुतखाना भी उसी की याद में बना। मस्जिद की शकल महराबदार है जिसकी तरफ मुंह करके इंसान नमाज़ पढ़ता है। यह इसी शरीर के हरि मंदिर का नमूना था। यह बाहर फिर रहा है। यह नमूना था अंतरीय बनावट का। हम माडल को, नमूने को असल समझ बैठे और हकीकत (सच्चाई) से दूर हो गये। मस्जिदें बनाना आसान था, मंदिर बनाना आसन था, और धर्म स्थान बनाना आसान था मगर इस शरीर के कुदरती हरि मंदिर में जो दीवा (दिया) जल रहा है उस पर गिलाफ (पर्दे) न चढ़ने देना यह आसान न था।

हमारे हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) एक मिसाल दिया करते थे कि एक स्त्री पति की तरफ जा रही है, दुनिया कहती है वह बदमाश है मगर वह कभी सुनती है क्या? वह जानती है कि मैं पति की तरफ जा रही हूं, मुझे दुनिया से क्या? अरे भई तुम चलो, अपने प्रभु की तरफ जा रहे हो, दुनिया कुछ कहे, अच्छा कहे या बुरा कहे, तुम चलो अपने प्रभु की तरफ। तुम उसके हो, वह तुम्हारा है। निशाना सबका एक है, गर्ज़ (उद्देश्य) सभी समाजों की यही थी मगर हुआ यह किः

चाले थे हरि मिलण को बीच ही अटकेयो चीत।

हम बाहर रस्मों रिवाज़ों में अटक कर रह गये।

(3) मौलवी साहब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या,
रूह क्या है दम है क्या, आग़ाज़ क्या अंजाम क्या।

यह थी असल बात जिसको हमने जानना था। रस्मो-रिवाज इसलिए बनाए गए थे कि रुचि पैदा हो, शौक़ पैदा हो, हम पर जब तक यह मुअम्मा (पहेली) हल नहीं होता बेशक सारी उम्र अपराविद्या के साधन करते रहो तुम कहीं नहीं पहुंच सकते। तुम कौन हो? इस जिस्म से तुम्हारा क्या ताल्लुक है? परमात्मा से क्या संबंध है? वह आंख खोलनी थी जिससे यह संबंध प्रत्यक्ष होकर नज़र आने लगता। बात तो यह थी। मौलवी साहब खुद बाहर माथे टेकते रह गये और बस।

(4) दम को लेकर सुम बकुम बेसब्र सा बैठा रहे,
कूचा-ए-दिलदार में वाअज़ से तुम को काम क्या।

कहते हैं बाहर बुद्धि के फैलाव में क्यों जा रहे हो। जिस तरफ चलो, सुम बकुम हो जाओ, डूब जाओ उसमें, बहरे गूंगे हो जाओ। जिसको पाना है, पूरी लगन से उसकी तलाश में लग जाओ, Headlong plunge कर दो इसमें। बाहर गिनती में जो लगे रहे, वे रह गये।

(5) यार मेरा मुझ में है यार में हूं बिलज़रूर,
वस्ल को यहां दखल क्या और हिज्र ना फरजाम क्या।

कहते हैं मैं तो वही हूं, मैं तो उसमें हूं। वस्ल होता है जब दो हों। जब दो से एक हो गए, वही वह है जिसका इज़हार हम हैं। जब पर्दे उठ गए फिर न जुदाई है न मिलाप है, न वस्ल का इंतज़ार है न कुछ, वही

जो हुआ। बात आखिर वहीं आती है, Christ कहता है, I and my father are one कि मैं और मेरा पिता एक हैं। गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं:

पिता पूत एके रंग लीने॥

फिर कहा:

पिता पूत रल कीनी सांझा॥

यह अनुभव जब जागता है यह उस अवस्था का ब्यान है। जब तक यह अनुभव नहीं जागता, जब तक जुदाई है, बाहर सोज़ है जुदाई का, मिलाप के लिए। इंसान हज़ारों जद्दोजहद (परिश्रम) करता है उसे पाने के लिए। जब यह अवस्था बन गई तो फिर न जद्दोजहद है, न जुदाई, वही बन गये तो फिर वही रह गया। यही बड़ाई है इसमें कि गुरु फनाफिलअल्लाह (प्रभु में अभेद) है। जो फनाफिलशेख (गुरु में लीन) हो गया तो फिर वह फनाफिलअल्लाह (प्रभु में लीन) हो जाता है। सेंट पाल कहता है, It is I, no not I, but Christ lives in me, कि यह मैं नहीं हूं, मेरे अंदर Christ (मसीह) बोल रहा है।

चुनां पुरशद फिज़ाए सीना अज़ दोस्त
कि ख्याल ख्वेश गुम शुद अज़ ज़मीम।

कि मेरे अंतर की फिज़ा उस प्रीतम से इतनी भर गई है कि अब वही वह रह गया है, मैं नहीं रहा। इस अवस्था को पा लिया तो फिर जुदाई काहे की? यह ख्याल ही नहीं रहा कि मैं कौन हूं।

(6) तुझ में मैं और मुझ में तू, आंखें मिला कर देख ले,
और अगर देखे न तू तो मुझ पे है इलज़ाम क्या।

कहते हैं कि अगर एकता को देखना चाहता है तो आंखें चार कर उस में मिकनातीसी (चुंबकीय) कशिश है। यह महवियत (तल्लीनता) ली जाती है। इसमें सब द्वैत का आलिम भूल जायेगा। यह (आंख) खींचती है। आरती जो पुराना तरीका था उसका यही मतलब था।

एक बार हज़ूर बैठे थे सत्संग में, मैं भी पास बैठा था। हज़ूर कभी कभी पास बिठा लेते थे, जैसे पिता बच्चे को पास बिठा लेता है। उस मौके पर मैंने कहा कि पहले एक ज़माना था कि पांवों का अंगूठा धोकर पिलाते थे। उसमें चार्जिंग जो होती थी। फिर दशम् गुरु साहब आये, उन्होंने

अमृत पिला कर Life enthuse (ज़िंदगी ताज़ा) की। फिर तुलसी साहब और स्वामी जी महाराज के ज़माने में आरती उतारने का दस्तूर हुआ, रूबरू बैठकर, आंखों में आंखें डालकर आरती की जाती थी। वह ज़माना गया। फिर हज़ूर आये और माथे टेकने का रिवाज हुआ। अब वह भी खत्म हो गया। ये सारी चीज़ें Charging (जीवनदान) के लिए थीं, बाद में खाली रस्म रह गई। आंख की इंद्री सबसे ऊंची है। नाक, कान, मुंह सब इस के नीचे हैं। इसका काम भी ऊंचा है। इससे ही आगे चलते हैं आप। यहीं से आगे का रास्ता खुलता है दो भ्रूमध्य नासिका का अग्र भाग (दो आंखों के दरमियान नाक की सीध में आंखों के पीछे)। जब दो आंखें मिलकर एक हो जायें तो अंतर रास्ता खुल जाता है। इससे महवियत का आलम बनता है। जब आंखों से आंखें चार हुईं तो फिर द्वैत कहां रही। यह था आरती की रस्म का मतलब। आंख आंख से यह दौलत मिलती है। आंख आंख को नशा दे जाती है। वहां जिस्म जिस्मानियत का होश नहीं रहता, जिस्म जिस्मानियत का ख्याल ही न रहा तो नंगो नामोस कहां रही? यह महवियत (मस्ती) का आलम (स्थिति) है।

(7) पुख्ता मग़ज़ों के लिए है रहनुमा मेरा सनहन,
हाफ़िज़ हासिल करेंगे इससे मर्दे खाम क्या।

हाफ़िज़ साहब फरमाते हैं कि ये जो बातें मैंने कही हैं ये उनके लिए हैं जो तैयार हो चुके, जिनका आखिरी संबंध है या जिनके दिलों दिनमाग पुख्ता हो चुके हैं, जिनमें सुमति आ चुकी है, जो हकीकत के नज़दीक आना चाहते हैं, जो उपासना के लिए तैयार हैं। जो बैचारे अभी खाम (अनुभवहीन) हैं उनके लिए अभी यही है कि किए जाओ, किए जाओ अपराविद्या के साधन। उनके लिए अभी देर है। हकीकत इसमें है, आप में भी है मगर उसे Rekindle (जगाना) करना पड़ेगा थोड़ी लूकी (चिंगारी) लेकर। गुरु प्रणाली चलती है तो वह आंखों के ज़रिये चलती है कागज़ों के ज़रिए नहीं। आंख आंख को दौलत दे जाती है, चार्जिंग (Charging) दे जाती है, सारी उम्र वह नशा भूलता नहीं। लोग समझते हैं कि लिख लिखकर गुरु-गद्दी मिलती है। सो फरमाते हैं हाफ़िज़ साहब कि ये बातें उन लोगों के लिए हैं जो गुरमुख हैं। बाकी जो लोग हैं वे अभी तैयारी में हैं। तो यह हाफ़िज़

साहब का शब्द था। परमार्थ की कुंजी अनुभवी पुरुष के हाथ में है। यह ऐसा मुअम्मा (पहेली) नहीं जो किताबों से हल हो सके, पढ़ना पढ़ाना इसलिए है कि हमारी अक्ल जो खम (मंद) है वह पुख्ता हो जाए। एक बात को समझ सको कि बात क्या है। बात तो एक ही है। बात सिर्फ इतनी है कि यह जो मैं और तू का पर्दा है, यह जो द्वैत का आलम है यह कैसे हटे। इसको हटाने का तरीका क्या है? यह महवियत का आलम है। यह आंख का नशा है, आंख से मिलता है। यह नशा जिस में जाग उठा, उससे तुम्हें भी यह नशा मिल सकता है। यह नशा किताबों से नहीं मिलेगा, अपराविद्या के साधनों से नहीं मिलेगा। जहां आग जल रही है वहां जलती आग से आग मिल जायेगी वह सब जला देगी। जिनसे यह फैज़ मिलता है उनकी तारीफ सभी महापुरुष करते आये और आगे करते रहेंगे। वे क्या कहते हैं? श्री गुरु अमरदास जी फरमाते हैंः

हर सच्चा गुर भक्ति पाइए सहजे मन्न वसावणेया॥

जब फनाफिलशेख (गुरु में लीन) हो गया तो फिर फनाफिलअल्लाह (प्रभु में लीन) हो जाता है। यहां सुध बुध का सवाल नहीं, हर चीज़ यहां स्थिर हो जाती है, अनुभव फिर जागता है। और कोई तरीका नहीं इसको पा लेने का। वे देखते हैं तो कहते हैं कि यह अजीब बुत है इंसानी, वह इंसान नहीं कुछ और भी है। उनका नशा जब चलता है तो वे क्या कहते हैं? भाई नंदलाल जी गोया, दशम् गुरु साहब के ज़माने में बहुत बड़े गुरु भक्त हुए हैं, फरमाते हैं :

दीनो दुनिया दर कमंदे आब परी रुखसारे मा।
हर दो आलम कीमते रुखसार मुए यक तारे मा॥

कि उसके एक एक बाल पर मैं दोनों आलम कुर्बान कर दूं। वे देखते हैं उस झलक को तब कहते हैं। अमीर खुसरो जब मुर्शिदप्रस्त बने, याद रखो मुर्शिदप्रस्ति हकीकत प्रस्ति है, मुसलमानों में बुत प्रस्ति कुफ्र (पाप) समझी जाती है। अमीर खुसरो जब मुर्शिदप्रस्त बने तो लोगों ने कहा कि यह बुतप्रस्त है, यह काफिर है। उन्होंने कहाः

खलक़ मी गोयद कि खुसरो बुत प्रस्ती मी कुनद,
आरे आरे मी कुनम बा खलक़ो आलम कार नेस्त।

कि हां मैं बुत प्रस्ति करता हूं, मुझे तुम लोगों से क्या लेना देना है। जब किसी के हो गये तो फिर उसका रूप हो गये। ऐसे महापुरुष का खुश होना परमात्मा का खुश होना है।

गुरु राज़ी तो करता राज़ी

यह स्वामी जी महाराज कह रहे हैं, मगर गुरु गुरु हो, So-called गुरु न हो जो मन-इंद्रियों के घाट पर बैठा है, वह राज़ी भी हो तो क्या। जो खुद गढ़े में गिरा हुआ है वह दूसरों को क्या दे सकता है। ऐसे गुरुओं के तलख तजरबें (कटु-अनुभव) लोगों को होते हैं तो वे कह उठते हैं, It is all gurudom, कि यह सब धोखा है। जिनकी थोड़ी नज़र बन जाती है वे उसमें हकीकत की झलक देखते हैं। वे क्या कहते हैं?

यक निगहे जां फ़िजायश बस बवद दरकारे मा।

जान को उभारने वाली तेरी एक नज़र मेरे लिए काफी है। अगर उसकी एक टेढ़ी नज़र हो जाए तो दीन-दुनिया (लोक-परलोक) दोनों हराम हो जाते हैं। उसका राज़ी होना मुश्किल है। मालूम नहीं कौन सी अदा उसे पसंद आ जाए। बुल्लेशाह साहब के जीवन का एक वाकेया है। पूर्ण पुरुष लोक-लाज को रहने नहीं देता। बुल्लेशाह ने साईं इनायत शाह से उपदेश लिया। शाह इनायत ने कुछ लोगों को भेजा, सड़कों पर नाचते टापते जाओ बुल्लेशह के यहां और कहो कि तेरे गुरु भाई आये हैं। वे नाचते टापते गाते बजाते गये। पूछा, बुल्लेशाह कहां हैं? लोगों ने बुल्लेशाह से कहा कि तेरे गुरु भाई आये हैं। बुल्लेशाह ने लोक-लाज में आकर कह दिया, वे मेरे गुरु भाई नहीं हैं। वे बेचारे वापस चले आये। आकर शाह इनायत से शिकायत की। उन्होंने फरमाया, अच्छा कोई बात नहीं, आज वहां पानी नहीं देंगे। याद रखो कि गुरु शिष्य को खुराक देता है अपनी तवज्जो से। शिष्य हज़ारों मीलों पर बैठा हो तवज्जों वहां भी मार करती है।

सतगुर सिख को जिया नाल सम्हारे॥

अभी थोड़े दिन हुए हैं, West (पश्चिम) से एक चिट्ठी आई मुझे। उसमें लिखा था कि मैं जब अभ्यास में बैठती हूं तो उसके बाद देर तक मुझे खुशबू आती है। मैंने जवाब में लिखा कि यह Thought waves (ख्याल की लहरें) हैं जो Receptive (जिन का बर्तन तैयार हो गया) बन जाये उसको खुशबू आती है, इसलिए Receptive होना चाहिए। अगर

रेडियो ठीक सैट न हुआ हो तो वह आवाज़ कैच नहीं कर सकता। गुरु का राज़ी होना मुश्किल है याद रखो। वह न रुपये से राज़ी होता है न जायदादों से। वह तो भाव भक्ति से प्रसन्न होता है। सिख कर ही क्या सकता है अगर उसकी दया न हो। एक बार हज़ूर लाहौर में थे, फरमाने लगे, "कृपाल सिंह, मैंने बूटे लगा दिये हैं, तुम पानी देना।" मैने अर्ज़ किया, "हज़ूर पानी का क्या है? जितना पानी भेज देंगे, दे दिया जाएगा।"

गुरु की बेपरवाही बड़ी बुरी होती है। बुल्लेशाह की अंतर की रसाई बंद हो गई, आना जाना भी बंद हो गया क्योंकि गुरु का हुक्म था। शाह इनायत गाना सुनने के शोक़ीन थे। एक वेश्या हर जुमेरात को उनके दरबार में कव्वाली करने जाती थी। अब बिना आज्ञा के वहां कौन जाए। उनकी बेपरवाही बुरी होती है। उनकी एक नज़र फिरने से दोनों जहान सुनसान हो जाते हैं। बुल्लेशाह साहब ने उस वेश्या के यहां नौकरी कर ली। नौकरी में तनखाह मिलती है, यहां मुफ्त की नौकरी थी। वेश्या से उसने कहा कि मुझे गाना सिखा दो। दोनों के गुण स्वभाव आपस में मिलते हों तब आपस में प्यार होता है। जो खुशखती पसंद करेगा उसे वही शिष्य प्यारा होगा जो खुशखत है। गुरु को निष्काम सेवा पसंद है, गरीबों की मदद करनी पसंद है तो तुम भी यही करो। गुरु के गुण-स्वभाव पैदा करो, तुम उसके प्यारे हो जाओगे। यहां ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं, वह देखता है। तो बुल्लेशाह साल छः महीने गाना सीखते रहे। एक दिन वह वेश्या शाह इनायत के यहां गाने के लिए जाने लगी तो बुल्लेशाह ने कहा कि मेरी एक बात मान ले, अपने कपड़े मुझे दे दे, आज मैं गाना सुनाऊँगा। बुल्लेशाह की जो काफियां हैं उनमें उनकी अपनी दर्द भरी दास्तान है। इसीलिए उनमें इतना दर्द भरा हुआ है। वह जानने वाला देखता है कि यह किस रंग में गा रहा है। उन्होंने कव्वाली की, बड़ी दर्द भरी आवाज़ में। शाह इनायत साहब ने सुना, उठ कर गले लगा लिया। अब एक ने, दो ने, चार ने, सब ने अपनी अपनी नज़र से देखा। कई मन में सोचने लगे कि अच्छा फकीर है यह वेश्या को गले लगा रहा है। शाह इनायत ने कहा, "भाई बुल्ले, अपने कपड़े उतार दे ताकि लोगों का शक दूर हो जाये।" रूठे सत्गुरु को कैसे मनाया जाता है और उनके मान जाने से

क्या कुछ मिलता है? यह जो शब्द आ रहा है श्री गुरु अर्जुन देव साहब का इसमें इसी का थोड़ा सा ज़िक्र है। श्री गुरु अर्जुन साहब क्या फरमाते हैं। गौर से सुनिएः

(1) पै पाये मनाई सोए जीओ॥ पै पाये मनाई सोए जीओ॥

कहते हैं कि मैं उनके, सत्गुरु के चरणों में पड़ रहा हूं कि किसी तरह वे मान जाये। ऐ सत्गुरु, मैं तेरे चरमओं में पड़ गया, तू मान जा किसी तरह। उसको मना रहा है। कहता है मेरे जीवन का आदर्श यही है कि गुरु राज़ी तो कर्ता राज़ी, उसके अंदर परमात्मा काम कर रहा है। उसका राज़ी होना परमात्मा का राज़ी होना है। तो कहते हैं ऐ सत्गुरु, मैं तेरे चरमों में पड़ रहा हूं, किसी तरह मान जा।

(2) सत्गुरु पुरख मिलाया तिस जेवड अवर न कोए जीओ॥

वह सत्गुरु जो है वह सत् का स्वरूप है। वह पुरख है, Ruling power (कुल मालिक) है, उसकी Will (मर्ज़ी) सब पर हावी है, उस जैसा और कोई नहीं, कहां? कहते हैं न इस दुनिया में न उस दुनिया में, उसके समान और कोई नहींः

गुर तुल्ल होर न लब्भई खोज डिट्ठा ब्रह्मंड॥

जिस जिस की जहां जहा तक दौड़ है वह वहीं की बात कहता है। जिन की इस दुनिया में दौड़ है वे इस दुनिया की बात कहते हैं। जिनकी ब्रह्मंड तक दौड़ है, बल्कि उसके पार जाते हैं वे कहते हैं कि उसका सानी न इस लोक में न अगम लोक में है। वह सत् का स्वरूप है। वह पोल है जिस पर सत् इज़हार (प्रकट) करता है। सो उस सत्गुरु को यह मना रहा है। तू राज़ी हो तो परमात्मा राज़ी हो जाये।

दो दिलों का गुण स्वभाव एक हो तो ज़रूर आपस में प्यार हो जाता है। एक को सेवा पसंद है गरीबों की, एक को भजन पसंद है, वही काम तुम करो, बेअख्तियार प्यार होगा। तो कहते हैं तेरे पास पहुंचना परमात्मा के पास पहुँचना है। मौलाना रूम फरमाते हैं कि जो वली अल्लाह के करीब आ गया समझो कि वह परमात्मा के करीब आ गया और जो उससे दूर हो गया समझो कि वह परमात्मा से दूर हो गया। वह (सत्गुरु) सत्

का स्वरूप है, उसके इज़हार करने का पोल है, इसलिए मैं बार बार उसे मना रहा हूं। वह बातों से मानने वाला तो है नहीं। कहना कुछ और करना कुछ और, इस तरह हम दुनिया को धोखा दे सकते हैं उसको धोखा नहीं दे सकते। हमारे हज़ूर फरमाया करते थे कि वह ताकत अभुल्ल है, जब तक फिट नहीं देखती अंतर रास्ता नहीं देती। ये लोग देखते हैं कि कहीं करक (रड़क) तो बाकी नहीं रह गई मन बुद्धि की? गुरु अर्जुन साहब जी की यह बाणी है। उनकी भी बड़ी ज़बरदस्त परीक्षा हुई थी। ये लोग टैस्ट करते रहते हैं, नये से नया टैस्ट होता है इनका। वे देखते हैं कि कितनी कुर्बानी है इसमें, कितनी भाव भक्ति है, कितनी रड़क है मन में? जो गुरु पर सब कुछ कुर्बान कर दे उसका काम बनता है।

दशम् गुरु साहब के ज़माने में नबी अली खां थे। उन की घरवाली थी। जब उसे खबर देने गये कि तेरा पति मर गया तो उसने पूछा कि सुनाओ गुरु साहब तो राज़ी हैं? वह पति से भी प्यारा है उसको। यह आत्मा का नाता है परमात्मा से। उसे मनाने का सवाल है, वह किसी तरह राज़ी हो। उसकी खुशी बातों से नहीं मिलती, वह तब मिलेगी कि जो वह कहे वही करो। जो बच्चा पिता की रज़ा में रहे, उसके इशारे पर चले उसकी खुशी वही लेगा। जो अपनी दलीलें लगाता रहे, उसका कहना न माने, प्यार तो वह उससे भी करता है पर उसे कुंजी नहीं सौंपता। गुरु अर्जुन साहब ने गुरु की खुशी कैसे हासिल की? श्री गुरु रामदास जी की बिरादरी में एक शादी थी लाहौर में। वह अमृतसर में थे। वहां शादी में चलने के लिए बड़े लड़के पिरथी चंद की बुलाया और उससे कहा कि शादी में जाकर चौदह-पंद्रह दिन वहां गुज़ार आओ। अनुभवी पुरुष जब आते हैं तो कई गद्दियों के दावेदार और रुपए पैसे के पुजारी भी वहां पहुँच जाते हैं। गुरु साहब ने पिरथी चंद से जो कहा तो वह बोला कि मैं चला जाऊं तो यहां का काम कौन करेगा? यह सारा इंतज़ाम कौन करेगा? बीच में यह ख्याल था कि यह गुरु अर्जुन साहब से ज्यादा प्यार करते हैं, कहीं उन्हें गद्दी न दे दें। एक लड़का गुरु साहब का, उसका नाम था महादेव, वह हर वक्त मस्त रहता था। श्री गुरु रामदास जी ने अर्जुन साहब से कहा कि तुम शादी पर चले जाओ और वहीं रहना जब

तक मैं हुक्म न भेजूं, यहां न आना। गुरु साहब का हुक्म था, ये गये। प्रेम मजबूर हो गया, जब तक हुक्म न मिले ये वापस नहीं आ सकते थे। और कोई प्रेमी होता तो वह चला आता कि महाराज, प्रेम ने मजबूर किया मैं चला आया मगर यहां हुक्म की दीवार थी। याद रखो जो हुक्म मानता है वहीं यहां मकबूल (स्वीकार) है। कई दिन बीत गये, कोई संदेश न आया उधर से। फिर चार हर्फ लिखेः

मेरा मन लोचे गुरु दर्शन ताईं॥
बिलप करे चात्रिक की न्याईं॥
त्रिखा ना उतरे शांत ना आवे
बिन दर्शन संत प्यारे जीओ॥

यह चिट्ठी लिख कर एक आदमी के हाथ गुरु साहब के पास भेज दी। चिट्ठी के ऊपर एक नम्बर लगा दिया। वह चिट्ठी गुरु साहब के बड़े बेटे के हाथ लग गई, उसका कोई जवाब न आया। एक और खत लिखा। लाहौर से अमृतसर का फासला पच्चीस तीस मील से ज्यादा नहीं मगर यहां गुरु के हुक्म की दीवार हायल (रुकावट) थी। याद रखो जो गुरु के हुक्म की दीवार का उल्लंघन करता है, वह कभी हकीकत को नहीं पा सकता। थोड़ा बहुत फैज़ (लाभ) उसे मिल भी गया मगर वह पूर्ण न होगा। पहली चिट्ठी का कोई जवाब न आया तो दूसरी चिट्ठी लिखी।

धन्न सो देस जहां तू वस्सेया

इस चिट्ठी में लिखा कि वह देश धन्य है जहां तू बस रहा है, संगतें आती हैं और तेरे दर्शन करती हैं। तेरा मुख सुहावा जीओ, सहज धुन बाणी, तेरी शक्ल देखकर, तेरा दर्शन पा कर हमारे अंतर में ध्वनि चलती थी। यह चिट्ठी भी पिरथी चंद के हाथ लग गई। जब उस चिट्ठी का भी कोई जवाब न आया तो हार कर तीसरी चिट्ठी लिखी। वह इससे भी बढ़कर थीः

इक घड़ी ना मिलते तां कलजुग होता॥
हुण कद मिलिये प्रिय तुध भगवंता॥

यह तीसरी चिट्ठी भी इसी तरह आदमी के हाथ भेज दी। पिरथी चंद उस वक्त मौजूद न थे, वह चिट्ठी गुरु साहब को मिल गई। ये लोग जानते सब कुछ हैं मगर मर्यादा रखते हैं, किसी का पर्दाफाश नहीं करते।

आखिर In due course (वक्त आने पर) असलियत सब ज़ाहिर हो जाती है। माफ करना, हम गुरु को इंसान भी नहीं समझते। गुरु साहब ने पिरथी चंद को बुलाया और पूछा कि इस से पहले की दो चिट्ठियां कहां हैं? उन्होंने कहा, "महाराज आप तो हमें चोर समझते हैं।" चोर की दाढ़ी में तिनका। गुरु साहब ने कहा, "जाओ इसके कोट से वे चिट्ठियां निकाल लाओ।" फिर अर्जुन साहब को बुलाया और फरमाया कि तीन कड़ियां तो लिखी जा चुकी हैं, जो इसके साथ चौथी कड़ी लिख देगा, उसे गुरु-गद्दी मिलेगी। टैस्ट देना तो मुश्किल होता है। हज़ूर के वक्त में बड़ी बड़ी कविताएं बनती थीं, मेरे मन में कभी कभी स्वर उठता था और कई नज़में हो जाती थीं, लोग नकल करने लगे मगर शराब और पानी में बड़ी फर्क़ है। आखिर गुरु अर्जुन साहब ने यह कड़ी लिखीः

भाग होआ गुर संत मिलाया॥
प्रभ अविनाशी घर में पाया॥
सेव करी पल चस्सा ना बिछड़ां
जन नानक दास तुमारे जीओ॥

वे देखते हैं कि इसमें कितना हदे अदब (सत्कार की भावना) है। मैंने एक बार हज़ूर को खत लिखा कि हज़ूर मुझे प्रेम बख्शो मगर प्रेम बाअदब (सत्कार सहित) हो। यह डलहौज़ी की बात है। हज़ूर ने खत पढ़ा तो सीने पर रख लिया और फरमाया कि यह दात तो मैं भी मांगता हूं। ये जो कविताएं लिखी जाती हैं ये मनाने के तरीके हैं उसको। गुरु अर्जुन साहब जिन्होंने मनाया गुरु को, यह उन्हीं की बाणी है। फरमाते हैं मैं उसे मना रहा हूं क्योंकि उसका राज़ी होना परमात्मा का राज़ी होना है। हम बाणियां पढ़ छोड़ते हैं, उन पर विचार नहीं करते। आगे बतायेंगे कि गुरु को मनाने से हमें क्या मिलता है, बाणी लम्बी है जितनी हो गई इस समय में, बाकी फिर सही। अब इसके आगे लिखा है ह इक रहाओ, मतलब यह कि यह मुसल्लमा अमर है, पक्की बात है, इसे हृदय में धारण कर लो कि सत्गुरु जैसा और कोई नहीं। परमात्मा जैसा और कौन है? जैसे परमात्मा की कोई तारीफ नहीं की जा सकती वैसे ही गुरु की भी तारीफ नहीं की जा सकती। वह जिस्म रखता है पर वह जिस्म नहीं है।

अगर वह आप जिस्म हो तो क्या देगा? यह जितनी धरती है यह सब की सब कागज़ बन जाये, समुद्र सियाही बन जाये फिर भी उसकी महिमा ब्यान नहीं की जा सकती।

मैं इसाईयों के स्कूलों में पढ़ता था, शुरू से ही Inquisitive nature (खोजी स्वभाव) थी मेरी। मैं देखता था कि हम कहते हैं श्री गुरु नानक देव जी महाराज और महापुरुषों के नाम के साथ कई लकब (सम्मानजनलक शब्द) लगाते हैं और ये (ईसाई) क्राईस्ट को सिर्फ यसु कहते हैं। यह क्या बात है? मैने पादरी से सवाल किया कि आप यसु को खाली यसु कहते हैं कोई लकब अलक़ाब उसके नाम के साथ नहीं लगाते हालांकि छोटे छोटे आदमी के साथ आप मिस्टर ज़रूर लगाते हैं। उसने जो जवाब दिया, वह अभी तक याद है मुझे। कहने लगा, "Christ (मसीह) को हम खुदा का बेटा समझते हैं। जिस तरह खुदा की तारीफ नहीं हो सकती उसी तरह उसकी भी तारीफ नहीं की जा सकती। अगर हम उसकी तारीफ करें तो हम उसे छोटा ही बनायेंगे।"

तू सुलतान कहां हौं मियां तेरी कवण बड़ाई॥

सो फरमाते हैं कि यह बात Definite है, मुसल्लमा अमर है कि गुरु जैसा और नहीं। जिसे गुरु जैसा कोई और नज़र आने लगा वह रूह व्यभिचारणी बन गई। हां Light (ज्योति) सबके अंदर है वह और बात है। ऐसी दो हस्तियां मिल जायें तो क्या बात है। लाहौर की बात है। महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन आये परी महल में। हज़ूर वहां उनसे मिले तो मैं भी वहां मौजूद था। अब हज़ूर उनके पांव पड़ते थे और वे उनके पांव पड़ते थे, अजीब नज़ारा था।

वह अनतोले नशे देता है, पिये जाओ। अगर किसी के पास है तो देगा, न हो तो कहां से देगा?

(3) गोसाईं मिहंडा इट्ठड़ा॥ अम्म अब्बे थावों मीठड़ा॥

कहते हैं वह सत्गुरु मुझे सब से मीठा है, माता पिता से बढ़कर मीठा है। माता कितनी मीठी होती है बच्चे को, वह उसे बहुत मीठा लगता है। बच्चा उसकी गोद में खेलता है, नाचता है, जो मांगे वह उसे देती है,

कहते हैं ऐसे ही मैं उसकी (गुरु की) गोद में खेलता हूं, वह सब से प्यारा है मुझे।

(4) भैण भाई सब सज्जणा तुध जेरा नाहिं कोए जीओ॥

कहते हैं वह मेरी बहनों से भी मीठा है, भाइयों से भी। ऐ सत्गुरु, तेरे जैसा और कोई मीठा नहीं है मुझे, मैं तेरी गोद में बैठा तुझे मना रहा हूं। ऐसा बच्चा जो मांगे पिता उसे देता है। जब सब तरफ से रिश्ता टूट कर उसी का सब कुछ रह जाता है तो काम बन जाता है। यहां बातों का काम नहीं, वह जो कहे वह करो, सेवा करो। लोगों की बुराई से बचो। सबके अंदर परमात्मा है, सबसे प्यार करो, लोगों की सेवा करो। वह कहता है कि उनकी सेवा मेरी सेवा है। जो गुरु के दर पर परवान हो गया वह परमात्मा की दरगाह में परवान हो गया।

(5) तेरे हुक्मे सावण आया॥ मैं सत का हल जोआया॥

कहते हैं ऐ मालिक, ऐ प्रभु, तेरे हुक्म से सावन आया। सावन से मुराद यहां वर्षा है, गुरु से है। गुरु, उसी प्रभु की वर्षा है दुनिया में। हमारे हज़ूर का नाम नामी भी सावन था। ये लोग मालिक के हुक्म से दुनिया में आते हैं। सो कहते हैं कि बारिश रहमत की आई है, वह उस (प्रभु) के हुक्म से आई है। मैंने ज़मीन साफ करनी शुरू कर दी है इससे फायदा उठाने के लिए। किस से? कहते हैं सत्संग से ज़मीन साफ करनी शुरू कर दी है। सत्संग से सब अलायशें साफ हो जाती हैं। कहते हैं कि रहमत की बारिश हो रही है। इससे फायदा उठाने के लिए ज़मीन साफ करो, सब रोड़े साफ कर दो। चुन चुन कर अपनी कमज़ोरियों को निकाल दो, उन्हें Weed out करो। तुम फैलाव में जा रहे हो, हकीकत तुम में हैं, बाहर से हटकर अंतर्मुख होकर हकीकत की तरफ जाओ। सत्संग में यही कुछ होता है। सो कहते हैं कि तुम सत्संग करो। बारिश आ गई है रहमत की उनकी (गुरु की) शक्ल में। इससे फायदा उठा लो, चुन चुन कर रोड़े पत्थर साफ करो। उनके हुक्म से मैंने सत्संग जारी कर दिया है तुम्हारी अलाइशें धोने के लिए। महापुरुष कहते हैं कि जहां चार भाई मिल बैठो, आपस में विचार करो, बरकत मिलेगी। मसीह कहता है, Where

more than two sit in my name there I am. कि जहां मेरे नाम पर दो से ज्यादा भाई आपस में मिल बैठोगे वहां मैं हूं, बरकत मिलती है, Charging मिलती है। दशम् गुरु साहब फरमाते हैं कि जहां पांच सिख बैठे हों वहां परमेश्वर होता है। बात सभी यही कह रहे हैं।

जहां आपस में खसूमत हो, कशमकश हो, एक दूसरे को बुरा कहे, दूसरा तीसरे को, वहां बरकत कहां? हरगिज़ नहीं।

सो कहते हैं कि मालिक के हुक्म से रहमत की बारिश आई है, लोग इस से फायदा उठा लें। इसलिए मैंने सत्संग जारी कर दिया है कि भई साफ हो जाओ। रहमत आ रही है तुम में धारा बह रही है, इसमें अपनी अलायशें (खामियां) साफ कर लो, चुन चुन कर बुराइयों को निकालों, उन्हें Weed out करो, अपनी तमाम खामियां, एक एक कर के निकाल दो। आप को मालूम है ये डायरियां क्यों रखाई गई हैं? जो अलायशें भर गई हैं हमारे अंदर, ये साफ हो जायें, चुन चुन कर निकाल दो। जब अलायशें निकल जायेंगी तो नाम का जो बीज डाला गया है वह उगेगा। सो फरमाते हैं, चुन चुन के रोड़े कंकर को साफ कर दो। अगर ज़मीन में रोड़े कंकर रहे तो बीज उगेगा तो सही पर वह फैलेगा नहीं।

नाओं बीजन लग्गा आस कर हर बोहल बख्श जमाए जीओ॥

कहते हैं कि मैंने सत्संग लगा दिया कि नेक पाक जीवन बन जाये, फिर नाम का बीज जमा दिया। अब प्रार्थना कर रहे हैं मालिक से कि हे प्रभु! दया कर उन के बीज फैला दे। यह नाम का जो बाज है उसी (प्रभु) की बख्शिश से फैलता है। वह (सत्गुरु) बीज डाल देता है नाम का, साथ में कहता है कि ज़मीन साफ करो, जीवन को नेक पाक बनाओ। हम डायरी नहीं रखते। यह जो डायरी दी गई है इसका खास मतलब है। जीवन की पड़ताल करो रोज़ रोज़, हम जीवन की पड़ताल नहीं करते। सत्संग में आओ, वहां पानी मिलता है। पानी नहीं मिलेगा तो बीज उगेगा कैसे। हमें इसके लिए वक्त ही नहीं मिलता। बताओ पानी कहां से मिलेगा। जो बीज नाम का बीजा गया है वह लहलहाता नहीं जब तक पानी न मिले। वहां (सत्संग में) उभार मिलता था, पानी मिलता था। यह बीज

नाश तो नहीं होगा मगर ऐसी हालत हो तो समझो कि इसके लहलहाने का वक्त अभी नहीं आया है। जिसके अंतर नाम का बीज डाल दिया गया ऐसा पुरुष न भी कमाई करे तो वह दोबारा आयेगा मगर Concession (रियायत) उसके लिए यह है कि वह मनुष्य जीवन से नीचे नहीं जायेगा क्योंकि नाम का बीज और किसी योनि में उग नहीं सकता। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:

को ऐसो समर्थ जो जारे इस बीच को।

यह नाम का बीज नाश तो नहीं होगा मगर अब इसी जन्म में क्यों न अपना काम पूरा कर लो। नाम का बीज फैलेगा। जो जीते जी पंडित है, वह मर कर भी पंडित है, जो जीते जी अनपढ़ है वह मरकर पंडित कैसे हो जायेगा? कोई यह ख्याल न करे कि नाम मिल गया बस अब बेड़ा पार हो गया। बेड़ा पार होगा मगर कितने जन्मों में? अभी क्यों न अपना काम पूरा कर लो। तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु ! इनमें जो नाम का बीज डाला गया है इनके बीज बिजा (प्रफुल्लित कर) दो।

(6) हौं गुर मिल इक पछाणदा॥ दुया गल्ल चित्त ना जाणदा॥

कहते हैं जबसे हमें गुरु मिला है सिवाय उस एक के कोई और हमारी नज़र में नहीं समाता। वह उस एक के सिवाय कोई और बात जानता ही नहीं। हनुमान जी से पूछा गया कि आज क्या वार (दिन) है। कहने लगे, "हे राम।" पूछा क्या तिथि है? कहने लगे, "हे राम"। उसे और सूझता नहीं, उसके लिए वही एक ही एक है। जहां देखता है उस एक को देखता है, जिससे बातें करता है उस एक से ही बातें करता है। गुरु के मिलने का यही फायदा है:

बिसर गई सब तात पराई॥
जब ते साध संगत मोहे पाई॥

वहां न Party feeling (धड़ेबंदी) है न सामाजिक और पोलिटिकल झगड़े हैं। वहां तो As a man problem (मानव समस्या) एक चीज़ पेश की जाती है। सो फरमाते हैं कि जब से गुरु मिला, बस एक ही एक रह गया है। मेरी अब अवस्था यह है कि उस एक के सिवाय और कोई सूझता नहीं मुझे। बात यह है कि वह जो एक पावर है वही गुरु के पोल

पर इज़हार कर रही है। वह एक है भी और नहीं भी, वह एक ही नहीं, कोई और भी है। इसका भी राज़ हैः

इस एके का जाणे भेयो॥ सोई करता सोई देओ॥

जो इस राज़ को जान गया वह उसका रूप हो गया। कहते हैं कि जब से गुरु मिला कोई और नज़र में समाता नहीं। जितने और आये सब इसी में थे, सब इसी का इज़हार थे, हम तो लाईट के पुजारी हैं, वह किसी भी पोल पर इज़हार करे। वह दो नहीं एक है। जिन की आंख खुलती है वही यह नज़ारा देखते हैं।

(7) हर इक ते कारे लाइयोन ज्यूं भावे तिवें निबाहे जीओ॥

कहते हैं कि अब तो एक काम पर लगा दिया, अब तुम ही तोड़ (सिरे) चढ़ाओ। तुम्हारे आसरे सत्संग जारी किया गया है, अब तुम ही तोड़ चढ़ाओ। हज़ूर ने मुझे हुक्म दिया सत्संग करो, काम जारी करो। हज़ूर कभी बाबा गरीब दास जी के पास गये, कभी चाचा प्रताप सिंह जी के पास गये। उन्होंने कहा कि हमारा चेताया हुआ जीव रह सकता है, तुम्हारा चेताया हुआ जीव नहीं रहेगा। यह Assurance (आश्वासन) पाकर उन्होंने काम शुरू किया था। मैंने कहा, "हज़ूर मैं किसके पास जाऊँ?" फरमाया, "तुम सच कहते हो।" मैंने कहा "हज़ूर भौंकने की डयूटी मेरी रही, संभाल आपकी।" फरमाया, "ऐसे ही होगा।" उनके भरोसे पर ही मैंने सत्संग जारी किया। मेरा तो यह सत्संग है नहीं, उसी का है, वही जाने। जो उसने बख्शा है वह दिया जा रहा है सबको। वही सबको फैज़ (लाभ) पहुँचा रहा है। All credit goes to him, सारा श्रेय उनको जाता है। में West (पश्चिम) में गया तो लोगों को फैज़ मिलने लगा तो मैंने कहा, All credit goes to my Master, कि यह सब उसी की बरकत है जो लोगों को फैज़ मिल रहा है। माफ करना, लोग सारी उम्र हड्डियां गोडे रगड़ते रहते हैं। एक शमा भी लाईट का नहीं आता। यहां हर एक को लाईट आती है। यह अलहदा बात है कि लोग उसे संभाल न सकें। मिलती तो हर एक को है कि नहीं। जो हुक्म की बजावरी करते हैं, वे दिनों-दिन तरक्की करते हैं, सौ फीसदी Cent percent है यह बात। यह बात जो मैं अर्ज़ कर रहा हूं Challenge (चैलेंज) है। यह कौन

सीने पर हाथ रखकर कह सकता है कि बैठ जाओ, सब को तजरबा मिलेगा। एक अष्टावक्र ने एक राजा जनक को ज्ञान दिया था। आज तक अष्टावक्र अष्टावक्र हो रही है। उस महापुरुष की जिन से लोगों को यह फैज़ मिला उनकी कितनी दया है। ज़माना अब बदल गया है, हालात बदल गये हैं। आज जो यह अमली तजरबा न होता कोई इस तरफ आए भी न। West (पश्चिम) में कई सिलसिले हैं, कई Movements हैं, कहीं Suggestions की, कहीं Hypnotism की। ये वे बेशुमार सिसिले हैं, इस को (सुरत शब्द के मार्ग को) जानता ही कौन है? मैं कह देता था कि जाओ, बैठ जाओ अभ्यास में। मैं आप चला जाता था। पिर जो तजरबा होता उन्हें तो मैं पूछता Is it hypnotism? कि यह हिप्नोटिज़्म तो नहीं, तुम्हारे होश ठिकाने हैं कि नहीं? वे कहते, "हां। हिप्नोनिज़्म में होश ठिकाने नहीं रहते। उस हालत में जो कुछ होता है वह याद नहीं रहता बाद में। सो उस महापुरुष के भरोसे पर मैंने सत्संग जारी किया है। मैं यही कहता हूं कि यह खेती आप की है, आप ही इसे निभाओ। मैं नाम देकर छोड़ देता हूं वह दया करता है। कई भाइयों को इस बात पर शक होता है। मैं कहता हूं, आकर देख लो अपनी आंखों से। भला देखने के बराबर तो कोई चीज़ नहीं। आगे तो यह था कि रूहानियत को कोई साबत (सिद्ध) नहीं कर सकता था। आज रूहानियत साबत भी हो सकती है, बैठो और देखो। कितनी भारी बख्शिश है।

(8) तुसीं भोगो भुंचो भाइयों॥ गुर दीबाण कवाए पहनाइयो॥

कहते हैं ऐ भाईयो, खाओ, पियो, ऐश करो, भुंचो हज़्म करो, उसके हुक्म से यह काम हो रहा है। दीवान बजाये तो कमीशन मिल जाती है। सो कहते हैं गुरु अर्जुन साहब कि उन महापुरुष का हुक्म चल रहा है, खूब खाओ, पियो, मज़े करो। मुफ्त चीज़ मिल रही है। सारी दुनिया की खाक छानते रहो, यह चीज़ प्राचीन ज़मान में, कहते हैं कि रूहानियत अरूज़ (शिखर) पर थी, सारे हिन्दुस्तान में एक अष्टावक्र निकला जिस ने राजा जनक को अनुभव दिया। आज क्या हज़ारों निकलेंगे? जिनको चीज मिल रही है गनीमत समझो। खूब खाओ, नाम का बीज बीजा जा

रहा है और वह फल रहा है, कमीशन (अख्तियार) के साथ कह रहा है वह।

(9) हौं ओआ माहर पिंड दा बंन आंदे पंज शरीक जीओ॥

कहते हैं कि अब मैं इस पिंड का (जिस्म का) मालिक हो गया हूं, चौधरी हूं। इसमें पांच जो शैतान बस रहे थे, उन्हें बांधकर बैठा दिया है मैंने। किस की कृपा से? गुरु की कृपा से, यह अहंकार नहीं, इकरार कर रहे हैं। जिसका इतना प्यार होगा गुरु से मन इंद्रियाँ उसके काबू में क्यों न होंगी। सो कहते हैं अब मैं चौधरी हूं, इस घर का। पांच डाकू जो थे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, वह मैने बांध दिये हैं। किसके बल से कह सकता है? गुरु के बल से।

(10) हौं आया सामे तिहंडीया॥ पंज किरसाण मजेरे महंडीया॥

कहते हैं जब से मैं तेरी शरण में आया हूं ऐ सत्गुरु, पांच कर्म इंद्रे और पांच ज्ञान इंद्रे यह गैर मौरुसी मजारे मिल गये हैं मुझे, इनका हक कोई नहीं है ज़मीन पर, मैं उनको अपने हुक्म से चलाता हूं, अब ये मुझे नहीं चलाते। मजारे दो तरह के होते हैं एक मौरूसी, एक गैर मौरूसी। मौरूसी मजारे जो होते हैं उनका ज़मीन पर हक़ होता है मलकियत का। गैर मौरुसी मजारे मलकियत के हकदार नहीं होते। आखिर इंसान सुबह से शाम तक इंद्रियों के घाट पर काम ही तो करता है। मिसाल देकर समझा रहे हैं कि ये जो इंद्रे हैं वे अब मेरे हुक्म के ताअबे (अंदर) हैं। अब मैं उनको चला रहा हूं, ये मुझे नहीं चलाते। इस जिस्म में जो पांच शैतान थे उन्हें मैंने बांध कर बिठा दिया है।

(11) कन्न कोई कड्ढ ना हंघई नानक वुट्ठा घुग्ग गिराओं जीओ॥

कहते हैं अब किसी की मजाल नहीं कि मोढा (कंघा) मार सके, कोई हुक्म अदूली (न मानना) नहीं कर सकता, न ये इंद्रियां, न पांच चोर। कोई कह सकता है यह बात। लोग कहते हैं कि संत महात्मा कहते नहीं। अरे भई वे कहते हैं, वे न बतायें कि गुरु के चरणों में जा कर क्या मिलता है तो लोग कैसे समझ सकते हैं इस बात को। कहते हैं अंतर में इतना रस बन गया है संघना (गाढ़ा) रस कि उसमें मस्त हैं, मन-

ईंद्रे तमाम (सब) काबू में हैं, वे हिलजुल भी नहीं सकते। इंद्रे देखते हैं मगर काम नहीं करते। आंख खुली है पर देखती नहीं, कान सुनते नहीं। सब वश में हैं, मैं इस घर का चौधरी हूं अब। किस के बल पर बात कह रहे हैं? गुरु के बल पर। नाम का रस जो मिल गया है। जब नाम का बीज उगता है तो दुनिया की सारी चीज़ें फज़ूल (बेकार) बन जाती हैं। फिर अंतर के अंदर खुल जाते हैं। इसीलिए कहा है, All glory and beauty lies within you. वह तुम में है, उसे पाकर बाहर के रस भूल जाते हो। अब वे खींचते नहीं हमें, अब वे इशारे पर काम करते हैं, जब चाहो काम ले लो इंद्रियों से। पांच शैतान जो अंतर बस रहे थे इस घर में, वे बंधे पड़े हैं, मजाल नहीं कि कोई मोढा मार सके। इतना रस बन गया है अंतर में कि मदहोश हो रहे हैं।

(12) हौं वारी घुमा जांवदा॥ इक साहा तुध ध्यावंदा॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, मैं बार बार तुझ पर कुर्बान जा रहा हूं, दम दम कुर्बान हूं, मैं एक सांस भी नहीं ले सकता तेरी याद के बगैर। गुरु फनाफिल-अल्लाह (प्रभु में लीन) है, जो फनाफिलशेख (गुरु में लीन) हो गया वह फनाफिलअल्लाह हो जाता है। भीख का किस्सा है। एक मस्त तालिब था भीख उसका मुर्शिद था, हर वक्त यही रहता उसकी ज़बान पर, 'या भीख, या भीख' उसे मुर्शिद में खुदा नज़र आता था। शरीयत वालों ने फतवा लगा दिया कि यह काफिर (नास्तिक) है, इसे मौत की सज़ा दी जाये। अब मौत की सज़ा के लिए बादशाह की मंज़ूरी लाज़मी होती है। बादशाह के सामने मामला पेश हुआ। उसने देखा कि यह तो कोई मस्त फकीर मालूम होता है। पूछा, "तेरा खुदा कौन है?" उसने कहा, "भीख" "तो रसूल?" उसने फिर कहा, "भीख।" बादशाह ने कहा, "इसे छोड़ दो।" लोनों ने कहा, "भाग जायेगा।" बादशाह ने कहा, "कोई परवाह नहीं।" फिर फकीर से कहा, "हमारे इलाके में अर्से से बारिश नहीं हुई। अगर और दो चार दिन तक बारिश न हुई तो फसल मारी जायेगी और अकाल पड़ जायेगा। तू अपने मुर्शिद भीख से सिफारिश कर के बारिश करवा दे।" मस्त ने कहा, "मैं कह दूंगा अपने भीख से, बारिश हो जायेगी।"

जिसे गुरु पर पूरा भरोसा हो वही यह बात कह सकता है। जिसके अंतर में रसाई नहीं, जो अंतर में गुरु से मिला नहीं वह यह बात नहीं कह सकता है। मैं जो मांगूंगा माता मुझे देगी। वह कहता है अभी लाता हूं। फकीर से पूछा कि महाराज, फिर कब आओगे? उसने जवाब दिया कि आज से तीसरे दिन आऊँगा। दूसरे दिन ऐसी तेज़ बारिश हुई कि सब जल थल एक हो गये। उससे अगले दिन फकीर आया तो बादशाह ने शुक्राना अदा किया कि तेरे मुर्शिद ने बड़ी मेहरबानी की हमारे हाल पर कि बारिश कर दी। ये बीस गांव के पट्टे हैं लंगर के खर्च के लिए, यह हमारी तरफ से तू अपने मुर्शिद को पेश कर देना। फकीर ने कहा कि मैं मुर्शिद के पास फना चीज़ ले जाऊँगा, हरगिज़ नहीं। वह बेपरवाह होता है। उसके जो तालिब (शिष्य) होते हैं वे भी दुनिया की चीज़ों की तरफ से बेपरवाह हो जाते हैं। सो गुरु अर्जुन साहब बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि वही वह है उसके सिवा और कोई नहीं है मेरे लिए।

(13) उज्जड़ थेह वसाएयो हौं तुध विट्टों कुरबाण जीओ॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, दुनिया उजड़ी जा रही थी, तूने इसे बसाया। नाम का बीज बीजा जा रहा है, तेरी रहमत की बारिश हो रही है, बस रहे हैं सब। कितना भरोसा है। देखो हमको अपने भाई पर भरोसा है, भाई की खातिर गुरु की नाराज़गी भी मोल लेता है। गुरु पर इसे भरोसा नहीं, गुरु को तो यह इंसान भी नहीं समझता। ऐसा आदमी गुरु से लेगा क्या? वह (गुरु) तो गुज़ारे के लिए है, चलो माथा टेक लो, इंसान समझता है। मैं सबसे बड़ा हूं, मैं खुदा का भी खुदा हूं। सचमुच बनकर कहते हैं तो अलहदा बात है। यह तो यों ही ज़ोम (अहंकार) में जा रहा है:

(14) हर इट्ठे नित ध्याएंदा॥ मन चिंदी सो फल पाएंदा॥

इट्ठे प्यारे को कहते हैं। उस प्यारे हरि को मैं हर वक्त ध्या रहा हूं, दमा दम उसे याद कर रहा हूं। नतीजा यह है कि जो फुरना फुरता (ख्याल उठता) है वह पूरा हो जाता है। जब हर तरफ से उसका हो रहे तो Nature (कुदरत) उसकी Beck and call पर हो जाती है (उसके इशारे पर चलती है)। ऐसी हालत में जो फुरना पुरे वह पूरा हो जाता है। श्री गुरु अमरदास जी ने एक जगह कहा है कि ऐ मन, आगे तू हज़ार चीज़ें मांगता था मगर

तेरा जो फुरना होता था वह कभी पूरा नहीं होता। अब यह आज़मा कर देख, फुरना फुरा नहीं कि पूरा हुआ नहीं।

(15) सभे काज संवारियन लाइहयन मन की भुक्ख जीओ॥

कहते हैं हमारे सब कार्य अब रास हैं, मन की भूख खत्म हो गई। मन की तृप्ति हो जाती है नाम के मिलने से, कोई भूख नहीं रहती। वह उसको पा गया जिस के पाने से सब कुछ पाया हुआ हो जाता है, फिर किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती :

तुध बाझो होर की मंगणा सिर दुक्खां के दुक्ख॥
देह नाम संतोखिया उतरे मन की भुक्ख॥

कहते हैं ऐ प्रभु, तेरे बगैर और क्या मांगना है कोई और चीज़। हमें तो तू अपना आप बख्श दे बस, यही हम तुझ से मांगते हैं। उसके पाने से सब ख्वाहिशें पूरी हो जाती हैं। यह महापुरुषों का कलाम (वचन) है:

(16) मैं छड्डेया सभो धंधड़ा॥ गोसाई सेवी सच्चड़ा॥

कहते हैं मैंने धंधे सब छोड़ दिये हैं। वह गोसाईं को, प्रभु को सच्चे दिल से सेवने वाला बन जाता है। जो हुक्म हुआ उसे पूरा कर दिया, Attachment (लगाव) कोई नहीं। मेरी भौंकने की ड्यूटी थी, कर दी, संभाल होगी, अवश्य होगी। सो कहते हैं मुझे काम तो है पर धंधा कोई नहीं। हाय इस का क्या होगा? उसका क्या होगा? यह कैसे होगा? यह सब खत्म हो गया है। मैं तो काम कर रहा हूं। सब धंधे वह अपने आप कर रहा है। जो हुक्म मिला मैंने कर दिया, बाकी वह जाने।

(17) नौ निध नाम निधान हर मैं पल्ले बद्धा छिक्क जीओ॥

कहते हैं हर किस्म की खुशी के देने वाला परमात्मा का नाम है जो वह एक चीज़ हमने पल्ले बांद ली है। जब वह आ गया वह नाम सबका आधार है, वह आ गया तो सब कुछ आ गया। मैं अमेरिका गया तो वहां कई साईंसदान मेरे पास आये। उनमें से एक बड़ी देर तक बातें करता रहा। मैंने उससे कहा, Have you been able to create consciousness so far? कि क्या आप चेतना को पैदा कर सकते हैं? कहने लगा, नहीं। मैंने कहा कि यह जितनी Pursuit (खोज) है तुम्हारी It is all within domain of matter, यह सब जड़ पदार्थों तक है

और जो विद्या संतों की है वह चेतन की है, It is all within the domain of consciousness. उस रोज़ जो लोग उस बहस को सुन रहे थे वे कहने लगे कि यह शख्स कल नहीं आयेगा। दूसरे दिन वह पहला आदमी था जो आया और उसको सब से ज़्यादा तजरबा मिला। तो भई यह चेतन रास्ता है संतों का, पूर्ण पुरुषों का। यह उनकी कृपा समझो कि इतने मुश्किल मज़मून को बच्चों का खेल बना रखा है नहीं तो इतने जन्मों की तैयारियां कर के सालों तक, ये वे साधन करने पड़ते हैं। अब यह है कि आओ बैठों, करो और दखो, यह उसकी बरकत है। सो कहते हैं ऐ भाई, खूब खाओ, पियो, मज़े करो। वक्त है, हमेशा सावन नहीं आया करता। सावन में खूब बारिश होती है, जल थल एक हो जाते हैं, हर तरफ ठंडक हो जाती है।

(18) मैं सुखी हूं सुख पाया॥ गुर अंतर शब्द वसाया॥

कहते हैं कि गुरु ने शब्द, नाम अंतर में प्रकट कर दिया। अब मैं सुखियों में सबसे ज़्यादा सुखी हूं। इकरार कर रहे हैं, क्यों? इसलिए कि हमें भी शौक़ हो। जो गुरु से मिलेगा, उसकी रज़ा में रहेगा, उसका हुक्म मानेगा वह सब कुछ पा सकता है। सारी दौलत उसके लिए घर की है, पिता की दौलत। किस के लिए है? बच्चों के लिए। जो आज्ञाकारी बच्चा है उसके लिए। वह साथ थोड़े ले जाता है? वह सब यहीं छोड़ जाता है कि चलो काम करो। वह उसे अपनी समझ ले तो वह मंद पड़ जाती है, Stagnate कर जाती है। वह कहता है खूब खाओ, पियो, अनंद करो।

(19) सतगुर पुरख विखालेया मस्तक धर के हत्थ जीओ॥

उसमें (सतगुरु में) क्या बड़ाई है? बिठाया, सिर पर हाथ रखा और अंतर का रास्ता दिखा दिया। हथ रखे बगैर भी दिखा सकता है। कहते हैं सतगुरु ने मेरे सिर पर हाथ रखा और मुझे अलख अगम की सैर करा दी, रूह पिंड को छोड़कर ऊपर आ गई, अंतर ज्योति प्रकट हो गई। यह उसकी बख्शिश है। बताओ ऐसे महापुरुष की क्या तारीफ की जा सकती है। असल में वह परमात्मा किसी इंसानी पोल पर बैठ कर आप ही अपनी खबर देता है। वह महापुरुष है, वह दाता है, उस जैसा दाता दुनिया में कोई नहीं।

(20) मैं बुद्धी सच धर्मसाल है॥ गुर सिखां लद्धा भाल के॥

कहते हैं मैंने सच की धर्मशाला खोल दी है, स्कूल खोल दिया है सच का ऐसे शिष्यों के लिए जो गुरु को सर्च कर (ढूंढ) रहे हैं। ऐसे शिष्यों को वह तलाश करता है, उन्हें कहता है, आओ भई बैठो, लद्धा भाल को कहते हैं कि मैं उन्हें ढूंढ कर लेता हूँ। अंधा आंख वाले को कैसे तलाश कर सकता है? आंख वाला ही अंधे को पकड़े तो पकड़े। Christ (ईसा) ने कहा था एक बार, I have yet many sheep to look after, कि अभी बहुत सी भेड़ों को मैंने संभालना है। मैं जब यहां से अमेरिका गया तो बहुत से भाई यहां जमा थे। मैंने उस दिन यही कहा कि मैं भी वही लफ्ज़ दोहरा रहा हूं मसीह के कि I have yet many sheep to look after. मैं नहीं जा रहा, ले जाने वाला मुझे ले जा रहा है। वहां जो लोग बैठे हैं उसकी तलाश में, जो उसे ढूंढ रहे हैं। उनके लिए जो तलाश में हैं उनके लिए खुद बखुद सामान बनता चला जाता है और यही हुआ। जाने से पहले वहां कइयों को खुद बखुद स्वरूप आता था हज़ूर का भी और यह भी, दोनों स्वरूप आते थे। मैं वहां गया तो कई कहते थे हम साल भर से देखते चले आ रहे हैं इन्हें। अरे भई यह उसका काम है।

सो कहते हैं कि मैंने सच की धर्मशाल बना दी है। जो गुरु की तलाश में हैं इन्हें पकड़ कर पास बैठाता हूँ कि आओ भई बैठो वरना अंधा आंख वाले को कैसे ढूंढ सकता है, वह आप ही उस अंधे को पकड़े तो पकड़े। जिसके मन में सच्ची ख्वाहिश प्रभु को पाने की है वह परमात्मा ऐसों के लिए आप सामान करता है। वह क्या? किसी इंसानी पोल पर वह परमात्मा इज़हार करता है, वह चलता फिरता खुदा होता है। जिनके पीछे संस्कार होते हैं वे उसके आगे पीछे भागे फिरते हैं। यह कुदरत का सामान है। मैं जब इंग्लैंड से जर्मनी गया तो जो मेरे साथ रास्ते में थे वे कहने लगे कि आगे तुम जहां जहां गये वहां से चिट्ठयां आईं लोगों की, कोई न कोई वाकिफ भी था हर जगह मगर जहां अब जा रहे हैं, वे तुम्हें पहचान लें पर तुम कैसे पहचानोगे कि वे तुम्हें लेने आये हैं। मैंने कहा कि जो

भेज रहा है वह आप सामान करेगा, देख लेना। जो भेज रहा है, वही लेने आयेगा। जर्मनी के हवाई अड्डे पर उतरे वहां तो सैंकड़ों आदमी लेने आये हुए थे, सबने हाथ में गुलाब की छड़ी पकड़ी हुई थी, एक एक के हाथ में छड़ी थी गुलाब की। मैंने कहा ये लेने वाले आ गये। उन्होंने मुझे देखा तो भागे दौड़े, सामान कहां है, यह कहां है, वह कहां है, यह होने लगी। तो अपना काम वह आप करता है। यह Commission (परवाना मिलने का) का काम है, जिससे वह काम ले ले। एक से ले, हज़ारों से ले।

(21) पैर धोवां पक्खा फेरदा तिस निव निव लग्गां पाये जीओ॥

कहते हैं मैं पांव धोता हूं उसके, हर तरह से सेवा करता हूं कि शुक्र है तुम आ गये मुझे नहीं जाना पड़ा। जो आता है वह प्रभु भेजता है उसे। अच्छा भई लेने वाले आ गये, अब बिल्टी अदा हो जायेगी। असल बात तो यह है, वह समझता है कि मैं आदमी हूं, सेवादार हूं। जो आता है उसे कहता है, आओ भई बैठो, सिर आंखों पर। वह सेवा करता है, वह गुरु नहीं बनता। उसे तो सेवक बनना भी नहीं आता। गुरु तो एक है जो मुखतलिफ (विभिन्न) पोलों पर इज़हार करता है। जब वह आता है तो दुनिया को रोशनी मिल जाती है। बड़ी खोल खोल कर समझा रहे हैं गुरु अर्जन साहब।

(22) सुण गल्लां गुर पे आया॥ नाम दान इश्नान दृड़ाया॥

कहते हैं हम गुरु के पास आये उसकी बातें, उसकी प्रशंसा सुन सुन कर कि ऐसा महात्मा है, ऐसा महात्मा है, क्या मिला वहां हमको? कहते हैं तीन चीज़ें मिली वहां। एक नाम, एक दान, एक स्नान। नाम की दौलत, आप को पता ही है वह परिपूर्ण परमात्मा जो खंडों ब्रह्मंडों का आधार है, गुरु उसका Contact (ताल्लुक) दे देता है पिंड से ऊपर ला कर और यह उसको देखने वाला बन जाता है क्योंकि वह परिपूर्ण परमात्मा है, उसमें रस है, उससे प्यार बनता है तो प्यार तो देना ही जानता है। सच्ची बात यह है कि वह सच्चा दानी बन जाता है, हर किस्म के दान करने वाला बन जाता है। तन का, धन का, मन से वह लोगों की शुभ भावना करने लग जाता है।

नानक नाम चढ़ती कला॥ तेरी भाणे सरवत्त का भला॥

वह सबको Goodwill (शुभ भावना) भेजता है। तन कर के, मन कर के, और बाहरी सामान करके भी वह लोगों की सेवा करता है। इल्म (विद्या) कर के जो ज्ञान और अनुभव हुआ है उसको, वह लोगों को खोल खोल कर समझाता है। उसका जीवन तो देने के लिए है। जब तक यह देह है, दे, दे बस दे।

यह देह न रहेगी तो फिर कौन कहेगा? फिर कौन लेने आयेगा? कहते हैं यह तो एक चीज़ हुई, दूसरी चीज़ है स्नान, वह सब अलायशों से, मन-इंद्रियों के घाट की अलायशों से पाक कर देता है, पवित्र कर देता है। कहते हैं कि ये तीन चीज़ें आईं हममें उसके चरणों में आकर। सिख भाइयों में भी यही है। नाम, दान और स्नान। वे बाहर के स्नान को ही स्नान समझ लेते हैं। वे (संत जन) जिस्म को साफ रखते हैं, बाहर की सफाई अपनी जगह पर है। यह शरीर हरि मंदिर है, बाहर से इसे साफ रखो मगर अंदर से भी इसकी गलाज़तें (गंदगी) साफ करो। अंतर की सफाई नाम के साथ लगने से होती है। फिर उसमें खास क्या है? वह हमेशा कुर्बानी देना जानता है, वह देने आता है, वह लेना नहीं जानता, वह दाता है, मंगता नहीं। अगर गुरु ही मंगता हो तो वह देगा क्या? वह बिज़नेस नहीं करता, व्यापार नहीं करता। वह Free gift of nature (कुदरत की फ्री दाते) जो हैं वे फ्री (मुफ्त) देता है। अमेरिका में जो Talk (प्रवचन) होती है वे सब Paid होती हैं। उन पर टिकट लगता है मसलन पांच सौ आदमी हों तो पांच सौ डालर, कहीं एक हज़ार, इस रुपये से वे इंतज़ाम भी करते हैं और जो लैक्चर देते हैं, उनको पैसे भी दिए जाते हैं। West (पश्चिम) में यही दस्तूर है। मैं वहां गया तो पहला काम मैंने किया कि तकरीरें मुफ्त कर दीं। I gave them free talks, no ticket to be charged. पहले ही दिन The very first day जो Talk हुई God and man (प्रभु और इन्सान) थी वह Talk, एक शख्स उठा। कोई रूसी था, कहने लगा Where is the secretary, I offer five thousand dollars, कि इस सभा का सैक्रेटरी कहां है? मैं पांच हज़ार डालर (तकरीबन दो लाख रुपये) भेंट करना चाहता हूं।

मैंने उसे पास बुलकार कहा, Look here, I have not come to collect dollars. I have come to give something that I have gained by sitting at the feet of my Master. That is the gift of nature and must be given free, कि मैं यहां रुपये इकट्ठे करने नहीं आया। मैं तो देने आया हूं एक चीज़ जो मैंने गुरु के चरणों में बैठकर हासिल की है, वह आपको देने आया हूं। वह कुदरत की दात है और सबको मुफ्त मिलेगी। वहां हलचल मच गई। यह इसी चीज़ का नतीजा है कि वहां के लोग आज इतना जानते हैं मुझे वरना कौन जानता है। माफ करना, आज दुनिया में संतों की तालीम की महिमा हो रही है। आज मुझे अमेरिका से, जनूबी (उत्तरी) अमेरिका से, इंग्लैंड से, फ्रांस से, इटली से, इसाईयों के बड़े सैंटर रोम से, यहूदियों के सैंटर यूरोशलम से, जापान से, आस्ट्रेलिया से, हांगकांग से लोग Invite कर (बुला) रहे हैं कि जल्दी आओ। हमने सुना है कि आपने एक अनमोल दात दी है। भई मैंने कहां दी? देने वाले ने दी मगर इसकी प्रशंसा सुन सुन कर दुनिया इस तरफ आ रही है। वे लोग लिखते हैं कि हम बड़े Anxious (उत्सुक) हैं कि आप यहां आयें। बड़ी बेताबी से आपका इंतज़ार कर रहे हैं हम। यह किसकी महिमा? यह उस महापुरुष की कृपा से दुनिया को फैज़ (लाभ) मिल रहा है जिनकी, माफ करना, हमने कद्र तक नहीं की, अफसोस यही आता है।

(23) सब मुक्त होआ संसारड़ा॥ नानक सच्ची बेड़ी चाढ़ जीओ॥

कहते हैं कि सारे जहान की मुक्ति हो रही है, सब सच की बेड़ी पर सवार हो रहे हैं सबका कल्याण हो रहा है। यह उन्हीं की बरकत है।

(24) सब सृष्ट सेवे दिन रात जीओ॥ दे कन्न सुणो अरदास जीओ॥

कहते हैं कि सारी दुनिया में दिन रात Awakening (जागृति) हो रही है, ऐ प्रभु, हर जगह तेरी महिमा के गुण गाये जा रहे हैं, सब कान उठा उठा कर सुनते हैं कि यह क्या चीज़ आ रही है। जब मैं बाईबल का Reference (हवाला) देता था तो लोग हैरान होते थे कि पढ़ा तो हमने भी है लेकिन बात हमारी समझ में नहीं आई। वहां बारह चौदह Bishop (लाट पादरियों) ने नाम लिया। वे चर्चों में किसी समाज को लैक्चर

देने की इजाज़त नहीं देते, हरगिज़ (बिल्कुल) नहीं लेकिन चर्च वाले मुझे Invite (बुलाते) करते थे। मेरी 70 फीसदी Talks वहां Churches (गिरजों) में हुईं। वे कहते थे यह बात है तो बाईबल में मगर हम उससे नावाकिफ (अनजान) हैं। कहते हैं Our Bible requires new interpretation (कि हमारी बाईबल को नई व्याख्या की ज़रूर है।) Minister of Presbytarian Church (पादरी) था, उसने सत्संग सुना तो कहने लगा, Well I have been incharge of the Presbytarian Church for the last 40 years but today is the first thing I understand about Bible (कि मैं चालीस वर्ष से प्रेसबीटेरियन चर्च का इंचार्ज हूं लेकिन आज पहली बार मुझे समझ आई है कि बाईबल की तालीम क्या है)। वह पांवों पड़ गया सब के सामने, रो रो कर। तो मैं अर्ज कर रहा था कि यह सब उन महापुरुषों की महिमा है। सो फरमा रहे हैं श्री गुरु अर्जुन साहब कि सारी दुनिया में जागृति आ रही है। ऐ प्रभु, हर जगह तेरी महिमा के गुण गाये जा रहे हैं। यह सब तेरी कृपा से हो रहा है, तेरे अब्रे रहमत (कृपा) की जो बारिश हो रही है ये सब उसके करिश्मे हैं।

(25) ठोक वजाये सब डिट्ठिया तुसी आपे लैण छडाए जीओ॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, हमने दुनिया को खूब ठोक बजाकर देख लिया, यह दुनिया के वश की चीज़ नहीं। यह काम तो तेरी प्रशंसा से ही होगा, तेरे हुक्म से होगा। सो उसका हुक्म चल रहा है, सबकी संभाल होगी, हो रही है।

(26) हुण हुकम होवा मेहरवाण दा पै कोए ना किसे रंझाणदा॥

कहते हैं कि उस मालिक का हुक्म चल रहा है, अब किसी को दुख दर्द क्यों रहेगा? जो करेगा उसे मिलेगा, 'रंझाणदा' कि दुख दर्द अब नहीं रहेगा कहीं। नाम जो मिल गयाः

सरब रोग को औखध नाम॥

जो नाम की कमाई करेगा उसे दुख दर्द क्यों रहेगा? कहते हैं उस मेहरबान मालिक ने, सत्गुरु ने हुक्म दिया है कि जाओ सबका कल्याण करो। उसके अब्रे रहमत की बारिश हो रही है। इससे फायदा उठा लो।

(27) सब सुखाली वट्टियां एह होआ हलेमी राज जीओ॥

कहते हैं कि दुनिया सारी ही बस रही है, सुखी बस रही है नाम के जपने से। यह दौलत मिलने से क्या है, गरीबी मिल रही है, नम्रता, गरीबी, आजज़ी, Humality, यह जायदादें मिल रही हैं साथ में। जो नाम को कमायेगा वह देखेगा कि वही कर रहा है सब। वह Humble (नम्र) नहीं होगा तो और क्या होगा? परमात्मा को पाने का तरीका क्या है? सेंट आगस्टन कहते हैं, First humality, second humility, third humility. संतों के दरबार में हलीमी ही हलीमी है, गरीबी ही गरीबी है, नम्रता संतों का श्रृंगार है। इतनी बड़ी ताकत के मालिक होते हुए भी दम नहीं मारते। इशारे दे जाते हैं मगर कहते हैं कि यह सब उसी की कृपा है।

(28) झिम झिम अमृत वरतदा॥ बोलाया बोली खसम दा॥

याद रखो जहां नीची जगह होगी, वहीं पानी इकट्ठा होगा, नम्रता का प्याला बन गया, अंतर अमृत बरस रहा है। पूछा तुम जो यह कहते हो, कैसे कहते हो? कहते हैं वह मालिक मुझ से कहलवा रहा है, यह मेरा कहना नहीं। 'बोलाया बोली खसम दा,' मालिक मुझ से कहलवा रहा है, मैं कह रहा हूं।

नानक दास बुलाया बोले॥

और

जैसे में आवे खसम की बाणी तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

कहते हैं यह उस मालिक का अनुभव है जो मैं कह रहा हूं।

(29) बहु माण किया तुध ऊपरे तूं आपे पाइये थाएं जीओ॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, मुझे तेरे पर ही मान है हर एक तरह का और आप ही दया कर के उसे निभा रहे हो, यह सब आप ही का काम है, मेरा क्या है? दुनिया बसे या उजड़े यह मेरा काम नहीं, यह आप का काम है। मेरा काम यही है कि जो काम ले ले। आप ही की दया से दुनिया को फैज़ मिल रहा है। आप ही का बसाना है जो दुनिया बस रही है, आपही की दौलत से दुनिया फैज़ेआब (लाभ को प्राप्त) हो रही है। अब वक्त है, ये वक्त हमेशा नहीं आया करते। सो कहते हैं सावन

का अब्रे रहमत बरस रहा है। ऐ भाइयों, फायदा उठा लो, खूब खाओ, पियो, भूंचो, आनंद करो।

(30) तेरेयां भगतां भुख सद तेरिया॥ हर लोचा पूर्ण मेरिया॥

सत्गुरु इंसान नहीं, वह सत् स्वरूप हस्ती है, उसमें सच का इज़हार हो रहा है। कहते हैं कि ऐ सत्गुरु, जो तेरे भक्त हैं उनको हर वक्त तेरी ही लोच (लगन) लग रही है, उन्हें तू ही चाहिए। सो कहते हैं कि मेरी यही लोच है कि हर वक्त तू ही रहे, मैं तू हो जाऊँ, तू मैं हो जाये ताकि कोई यह न कह सके कि तू और है, मैं और हूं।

मन तू शुदम तू मन शुदी। मन तन शुदम तू जां शुदी॥
किस न गोयद बाद अज़ीं। मन दीगरम तू दीगरी॥

कि मैं तू हो जाऊं, तू मैं हो जाये, मैं तन हो जाऊं, तू उस तन की जान हो जाये ताकि फिर कोई यह न कह सके कि मैं और हूं, तू और है। वही जो हाफिज़ का कलाम था न, वही बात है, तरीका ब्यान अपना है, बात वही है।

(31) देह दरस सुख दातेया मैं गल विच लैहो मिलाये जीओ॥

कहते हैं कि ऐ सुख देने वाले सत्गुरु, अब दर्शन दो और मुझे गले से लगा लो, बस यही ख्वाहिश है, मेरी आपसे दूरी न हो, अपने पास मिला लो।

सेव करी पल चस्सा ना विछड़ां

कि मुझे अपने चरणों में लगा लो। गुरु की नज़दीकी एक बहुत भारी बरकत है याद रखो। A living Master is a great blessing, बड़ी भारी बरकत है, नाज़िल हो रही है, वहां अब्रे रहमत की बारिश हो रही है। उसकी धारा में, सत् की धारा में स्नान जो वहां मिलता है वह बड़ी भारी बरकत है। उसी को पाकर के इंसान रोता है, जिसने अंतर में भी उसे पा लिया, उसे कुछ ढारस बंधी रहती है। फिर भी जिस वक्त वह प्यार याद आता है, दुनिया में कोई ऐसा प्यार नहीं, उस वक्त आंसू भर आते हैं, दिल की हालत का इज़हार आंखों के रास्ते होता है। जो लाब्यान चीज़ है, उसे कोई क्या ब्यान करे।

(32) तुध जेवड अवर ना भालेया॥ तूं दीप लो प्यालेया॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, आप जैसा दीपों, लोकों और पातालों में हमने दरयाफ्त (पता) किया, कोई तुझ जैसा और नहीं है। सत्गुरु जैसा कौन? सत्गुरु जैसा सत्गुर ही है। आपको पता है वेद व्यास के पुत्र जैसा सत्गुरु धारण करने जाता था तो रास्ते से वापस लौट आता था। पिता ने फिर भेजा, वह फिर वापस लौट आया। कहने लगा, मैं तपस्वी वह विषयी विकारी राजा, मैं क्यों उसके पास जाऊं। नारद मुनि ने देखा कि उसे गुरु पर अभाव आ रहा है, यह अभाव में आकर अपनी कलाओं का नाश कर रहा है। उन्होंने क्या किया? एक बूढ़े की शक्ल बनाई और मिट्टी की टोकरी बना कर दरिया के बहते पानी में डालने लगे। सुखदेव ने देखा तो पूछा कि यह क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा इस रास्ते पर बंध बांध रहा हूं। सुखदेव ने कहा कि तू बड़ा बेवकूफ है, भला इस तरह बंध बांधा जाता है। पहले टहनियां डाल, फिर पत्थर डाल, तब मिट्टी रुकेगी वरना वह बह जायेगी। नारद बोले मैं बेशक बेवकूफ हूं मगर मेरा तो एक ही दिन ज़ाया हुआ है। सुखदेव सबसे ज़्यादा बेवकूफ है अनुभवी महापुरुष पर अभाव लाने से उसकी नौ कलाएं नाश हो चुकी हैं इस वक्त तक, दसवीं नाश होने वाली है। सुखदेव को ठोकर लगी। गए राजा जनक के पास और वहां अस्तबल में खड़े रहे। राजा जनक ने भी परवाह न की। खड़े खड़े सारा जिस्म लीद से भर गया। तीसरे दिन राजा जनक ने पूछा कि वेद व्यास का पुत्र सुखदेव यहां आया था, पहरेदारों ने कहा कि वह अभी तक खड़ा इंतज़ार कर रहा है। राजा ने कहा उसे अंदर ले आओ। जब वह अंदर आया तो जनक ने उसे चमत्कार दिखाना था, अपनी एक लात गर्म लोहे पर रख दी, दूसरी पर बंदियां (दासियां) चंदन की मालिश कर रही थीं। सुखदेव ने देखा तो मन में कहा कि है कोई यह भी। इसके बाद सुखदेव को लेकर राजा जनक एक कमरे में चले गये। इतने में हरकारे ने आ कर खबर दी कि शहर में आग लग गई है। जनक ने कहा, "हरि इच्छा" थोड़ी देर बाद आदमी खबर लाया कि महाराज, महलों में आग लग गई है। राजा ने फिर कहा, "हरि इच्छा" आदमी ने फिर आकर कहा कि महाराज, इस कमरे तक भी आग की लपटें आ गई हैं। यह सुनकर

सुखदेव ने अपना झोली डंडा संभाल लिया। राजा जनक ने कहा कि तू अच्छा त्यागी है, मेरा सारा शहर जल गया, महलों में आग लग गई, मैंने यही कहा कि 'हरि इच्छा' और तुझे अपने झोली डंडे की फिक्र पड़ गई। खूब आप्रेशन किया। कहने लगे कि तू ब्राह्मण है, व्यास का पुत्र है, तुझे ब्राह्मण होने का, व्यास का पुत्र होने का अहंकार है। डाक्टर जब आप्रेशन करता है तो पूरी सफाई करता है, ज़रा भी मैल अंदर नहीं रहने देता। जब सुखदेव राजा जनक से उपदेश लेकर वापस आया तो पिता ने पूछा गुरु कैसा था? सुखदेव बोला वह सूरज के समान तेज रखता है मगर सूरज में तपिश है उसमें तपिश नहीं। वह चंद्रमा की शीतलता रखता है, चंद्रमा में दाग है गुरु में दाग नहीं। मुखतलिफ (विभिन्न) मिसालें देने के बाद कहने लगा कि गुरु जैसा गुरु ही है। जिनकी आंख खुली है ये उनकी कहानियां हैं वरना हम तो कुराहिया कहते हैं उन्हें। श्री गुरु नानक साहब एक बार जब कसूर शहर गये तो लोगों ने उन्हें शहर में दाखिल न होने दिया कि यह कुराहिया है, लोगों की अकलें बिगाड़ता है। जहां सच की जितनी ज़बरदस्त लहर होगी, याद रखो, वहां उतनी ही ज़बरदस्त मुखालिफ होगी। काल का यह कायदा है ताकि उसके जीव बच जायें, मगर वह (संत) भी बांटता है, दोनों हाथों से लुटाता है कि आओ भाई ले जाओ।

जब मैं छोटा था भई, सातवीं जमात में पढ़ता था मैं, उस वक्त की बात है, बार बार मुझे वह दिन याद आता है। बारह तेरह साल का था मैं, रामानुज की किताब पढ़ी। मुझे शौक़ था शुरू से ही, सातवीं जमात में आदमी ए बी सी भी अच्छी तरह से नहीं बढ़ सकता। मैं किताब पढ़ता था रामानुज की लाईफ (ज़िंदगी)। उसे गुरु से उपदेश मिला तो एक मुंडेर पर खड़ा हो गया और सब को पास बुलाया। लोगों ने पूछा, यह क्या कर रहे हो? कहने लगे, मुझे जो दीक्षा (गुरुमंत्र) मिली है वह बतलाने लगा हूं। लोगों ने कहा कि तुम गुरु की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हो, नरकों में जाओगे। कहने लगे, मैं अकेला ही नरकों में जाऊंगा तुम सब छूट जाओगे। मैंने सोचा कि अगर मुझे यह दौलत मिली तो लुटा दूंगा। उन्होंने (सतगुरु ने) भी देखा कि यह फज़ूल-खर्च है, चलो दे दो इसी को। यह उन्हीं की बरकत है जो सबको फैज़ (लाभ) मिल रहा है।

एक अंग्रेज़ लेडी ने यहां नाम लिया तो यहां एक Friar (पादरी) से

मिली और उससे पूछा कि क्या तुमने Light (रोशनी) देखी है? उसने जवाब दिया कि हां देखी है। मैंने 19 वर्ष तक Mt. Sinai (कोह सेना) पर Penances (घोर तप) किए थे। तब एक बार मैंने धुंधली सी रोशनी देखी थी। वह लेडी कहने लगी कि मैं तो रोज़ Light (रोशनी) देखती हूं। यह बख्शिश है उसकी। इस दात की कोई क्या कीमत डाल सकता है? हम बेकद्रे हैं, हमें कोई कद्र नहीं, चीज़ मिलती है हम उसे संभालते नहीं, क्यों? सहज में जो मिल रही है। West (पश्चिम) वाले कद्र करते हैं, माफ करना। वे कहते थे कि आप पांच वर्ष यहां रहें तो सारी दुनिया इस तरफ लग जाये। तुम हिन्दुस्तान के खरीदे हुए थोड़े ही हो, तुम सबके हो। वहां थोड़ी देर का सफर था मेरा, यही कोई चार पांच महीने का सफर था मगर All the world over एक Awakening पैदा हो गई (सारी दुनिया में जागृति सी आ गई)। यह उनकी (सत्गुरु की) बख्शिश है। वे लोग इस चीज़ की तलाश में थे, उनको कद्र थी। यहाँ हमको चीज़ मिलती है, हम परवाह नहीं करते। सेंट ल्यूक कहता है Take heed that the light within you is not darkened कि भई तुम को ज्योति दी है, खबरदार रहो इस पर स्याही का पर्दा न फिर जाये। अरे भई जीवन की पड़ताल करो रोज़ रोज़ और रोज़ अभ्यास करो, क्यों स्याही का पर्दा फिरेगा? हम इस बात की परवाह नहीं करते। हमें इस काम के लिए वक्त ही नहीं मिलता। अगर आज मौत आ जाये तो फिर क्या हो? इस भूल में मत रहो कि मरकर मिलेगा, बिल्कुल एतबार मत करो। हज़ूर फरमाया करते थे जो जीते जी पंडित है मर कर भी पंडित होगा, जो जीते जी अनपढ़ है वह मर कर पंडित कैसे हो जायेगा। जीवन मुक्त को मानो, करो और देखो मिलेगी चीज़, ज़रूर मिलेगी। न करने का कोई इलाज नहीं, गलत करने का इलाज है। यह उस महापुरुष की बख्शिश है जो सब को फैज़ मिल रहा है।

(33) तूं थान थनंतर रव रेहा नानक भक्तां सच आधार जीओ॥

कहते हैं कहां? तू सबमें रम रहा हैः

सत्गुर रहेया भरपूर॥

तेरे भक्तों को तेरा ही एक आधार है। प्रहलाद थे, लोहे को तपाकर नाकिस (जल्लाद) ने कहा कि इसके साथ लगो। सब कहने लगे, 'हरे राम' 'हरे राम'। उसे ढारस देने के लिए एक कीड़ी (चींटी) तपते लोहे पर चला दी। वे (प्रहलाद) गर्म लोहे के साथ लगे। वह फटा और उसमें से नरसिंह अवतार निकला। तो मेरे कहने का मतलब है कि वह तो हर एक जगह मौजूद है। उसे देखता है वह जिसकी आंख खुली है। भक्तों को उस एक का आधार है। हज़ारों में खड़ा एक आदमी साबत कदम रहता है। वहां Talk में हज़ारों आदमी, जिन में बड़े बड़े लोग थे, Talk सुनने आते थे। एक मिनट के लिए भी मुझे यह ख्याल नहीं आया कि ये लोग क्या कहेंगे? बड़ी ताकत के साथ मैं कहता था कि ऐसा है, यह बात है। तो सब उसकी बख्शिश है, वह आप दया करता है। बात सिर्फ यह है कि हमें याद नहीं उसकी। हमारा उस तरफ मुंह नहीं, हम गुरु में नुक्स निकालते हैं। ऐसा आदमी लेगा क्या उससे? कभी भाव आया, कभी अभाव में आ गये, कभी ज़मीन बनी, कभी ज़मीन न रही। इससे क्या बनेगा?

(34) हौं गोसाईं दा पहलवानड़ा॥ मैं गुर मिल उच दुमालड़ा॥

अब कहते हैं कि मैं गुरु का पहलवान बच्चा हूं, इकरार कर रहे हैं। जब से गुरु मिला है मेरी पगड़ी का शिमलह (तुर्रा) ऊंचा है। यह उसकी बरकत है, उसका इकरार है। कहते हैं कि जहां जाता हूं लोक उसकी शान को देखते हैं और मुझे क्रेडिट देते हैं। मैं तो उसका पहलवान बच्चा हूं। बड़ा नहीं कहा, छोटा पहलवान कहा है अपने को मगर अब दुनिया में मेरी शान है। जहां देखता हूं उसकी महिमा हो रही है। यह जो पगड़ी में शिमलह (तुर्रा) है, रूमाला कहते हैं।

(35) सब होई छिंझ इकट्ठियां देओ बैठा वेखे आप जीओ॥

छिंज पहलवानों की पड़ती है। एक जज होता है उसमें। कहते हैं कि वह परमात्मा आप देख रहा है कि मेरा पहलवान खूब नाच रहा है। मैं अमेरिका में गया तो एक शख्स ने बताया कि मैंने अभ्यास में देखा कि हज़ूर बड़ा प्यार कर रहे हैं आप से, शाबाश दे रहे हैं आपको कि शाबाश तुमने बड़ा काम किया है और तुम बड़े खुश हो। मैंने कहा कि

पता नहीं मेरा गुरु साथ था मेरे, मैं खुश हूं, क्यों न होऊं। सो कहते हैं कि छिंझ पड़ी है, खेल हो रहा है, दुनिया देख रही है, वह परमात्मा खुद देख रहा है कि मेरा बच्चा खूब खेल रहा है। उसकी बरकत है न।

(36) दात वज्जण टम्मक भेरियां॥ माल्ल लत्थे लैंदे फेरियां॥

कहते हैं पहलवानी होती है, ढोल बज रहे हैं, पहलवान लोग इधर उधर आगे पीछे फिरते हैं लड़ने को। पहलवान बच्चा है उसका। दुनिया की ताकतें उसके खिलाफ खेलती हैं, वह भी खूब खेलता है। नतीजा क्या होता है? आगे कहते हैंः

(37) निहते पंज जवान मैं गुर थापी दित्ती कंड जीओ॥

कहते हैं कि गुरु ने मुझे थापी दी थी इसलिए पांच जवान काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जो खूब फेरे मारते हैं छिंझ (कुश्ती) में, उनको मैंने दबा दिया है, निहत्था कर दिया है यानी लाचार कर दिया है उन्हें, तेरी ध्वनि (शब्द) जो चल रही है उसके आधार पर। वह परमात्मा खुद देख रहा है, मैं गुरु का पहलवान हूं न छोटा, इकरार करते हैं।

(38) सब इकट्ठे होए आया॥ घर जासन वाट वटाया॥

घर जासन वाट वटाया कि इकट्ठे हो कर सब आ जायें, पांच जवान जो थे उनको बांध रखा है हमने, उन्हें निहत्था कर दिया है। अब लोगों से कह रहे हैं कि भई चलो घर अपने। जब टकभेरी बजने लग जाये तुम भी पार हो जाओ सब। मिसालें दे कर समझाने का तरीका है, कई तरीके हैं समझाने के।

(39) गुरमुख लाहा लै गये मनमुख चल्ले मूल गंवाये जीओ॥

कहते हैं कि जो गुरमुख बन गये वे मनुष्य जीवन सफल कर गये, उससे फायदा उठा गये और मनमुखों का क्या हाल है? कहते हैं वे मूल (असल) भी गंवा गये। यह गुरमुख बनने का थोड़ा नक्शा खींचा है। जहां जाता है गुरु की महिमा हो रही है मगर उस पर (प्रभु) इज़हार करने से लोग उसी को सब कुछ समझ रहे हैं और वह तो साफ इकरार करता है कि यह मेरी क्रेडिट नहीं, इस का क्रेडिट उसको, मेरे गुरु को है। कहते

हैं जो गुरमुख बनते हैं, जो Mouth piece of Guru बनते हैं यह दौलत उन्हीं को मिलती है।

बीस बिसवे गुरु का मत माने॥
तो परमेसर की गत जाने॥

अगर गुरु राज़ी न हो तो गुरमुखता कैसी? ऐसा आदमी चाहे लैक्चरार हो, ग्रंथाकार हो उसकी कुछ कीमत नहीं।

(40) तूं वरना चेहना बाहरा॥ हर दिस्सै हाजर जाहरा॥

कहते हैं कि ऐ सत्गुरु, तू चिह्न-वर्ण से परे है, तू हाज़िर हज़ूर है, सब जग में परिपूर्ण है तू, तेरा ही यह सब इज़हार है। जब तू में मैं आई और मैं में तू तो फिर कोई फर्क़ कहां रहा?

(41) सुण सुण तुझै ध्याएंदे तेरे भक्त रत्ते गुण तास जीओ॥

कहते हैं ऐ सत्गुरु, ऐ प्रभु, तेरी ध्वनि सुन कर तेरी याद में मस्त हो रहे हैं हम। हर वक्त तेरे गुणानुवाद गा रहे हैं, भक्त जन यह देख रहे हैं।

जब देखा तो गावा॥
तो गावे का फल पावा॥

देख कर ब्यान करने का कुछ और नशा है। सो कहते हैं भक्तजन तेरा गुणानुवाद कर रहे हैं, दुनिया सुन सुन कर नशे में बही जा रही है। Charging (चार्जिंग) लफ्ज़ों में भरी होती है।

(42) मैं जुग जुग दयै सेवड़ी॥ गुर कट्टी मैहंडी जेवड़ी॥

कहते हैं कि ऐ परमात्मा, आप से मैं यही दान मांगता हूं कि जुगो जुग (युगों-युग) तेरी सेवा करता रहूं। महापुरुष जब दुनिया में आते हैं तो वे हमेशा सेवा करने आते हैं।

हमारे हज़ूर एक बार रात को बैठे थे। फरमाने लगे कि हम को दुनिया में काम करने को भेजा जाता है। उनको खुला छोड़ दो तो फिर इशारे देते हैं कभी कभी। कहने लगे, जब एक तरफ फतह हो जाती है तो फिर दूसरी तरफ भेज दिया जाता है। हम अपना स्टाफ साथ लाते हैं काम करने को।

सो कहते हैं गुरु अर्जुन साहब कि ऐ मालिक, हम यही दान मांगते हैं तुझ से कि युगो युग तेरी ही सेवा करते रहें क्योंकि इसमें तेरी खुशी है, इसमें तेरी प्रशंसा है। अब दुनिया की जेवड़ी (फांस) कट गईं, बंधन कोई नहीं हमें, अब जहां मर्ज़ी हो भेज दो।

(43) हौं बाहुड़ छिंझ न नच्चऊँ नानक औसर लद्धा भाल जीओ॥

कहते हैं कि मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। इसमें हमें गुरु की शरण मिल गई। अब यह जो काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से लड़ाई होती है यह अब मैं नहीं लड़ूंग, अब मैं नाचूंगा नहीं। ये जो पांच डाकू थे निहत्थे (बेबस) हो चुके हैं। अब बेशक भेजो दुनिया में मुझे। जहां चाहो अपना काम करा लो। यह जो छिंझ (लड़ाई) थी, वह खत्म हो गई। यह श्री गुरु अर्जुन साहब का शब्द था। इसमें गुरु की प्रशंसा, गुरु की बड़ाई और गुरु के चरणों में सिख को क्या मिलता है उसकी कहानी है। अरे भई, उन महापुरुषों को मिला, अगर हमको भी गुरु मिले तो हमको भी मिल सकता है जो कुछ उन्होंने पाया। वे देने आते हैं, वे साथ नहीं ले जाते। हज़ूर फरमाया करते थे कि यह चीज़ यहां बांटने के लिए है, यहां तो बांटने वाला कोई नहीं मिलता मुझे। तो यह उन महापुरुषों की कृपा है जिनकी आंख खुली, जो हकीकत को देखने वाले बन गए, उन्होंने हकीकत का नशा पाया और कइयों को नशा दे गये।

◆◆◆◆◆